



ASHA ARCHIVES

1.650

ASHA ARCHIVES

ॐ नमः श्रीवसुधाय नमः॥

आशा आर्क़ाइव्स

1.650

ASHA ARCHIVES

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय श्रीव
 य ॥ दिव्यवृषिस्ववृषीश्वरी
 वसुधावाववसु श्रीश्रीक
 वहीधामाशवथाहकिव



सक्षवर्धे ॥ ॐ नमः स्वतन्त्रय
 म्भवदिववयुसावसुधवि
 दिवला ॥ ॥ धवधिध
 लवा ॥ यज्ञायामिमादवी

यज्ञश्रीवृद्धिवृद्धी ॥ ॥ दिव्यवृषिस्ववृषीश्वरी ॥ तव
 धितावृषीददी दिव्यादानवृषीश्वरी ॥ ॥ रुषिताहममाताश्वरीहवधरुषि
 नीददकशानिहीमादुयडुयववाकम् ॥ ॥ दानयावमिद्विवधेनिदि
 वृषिनीनिधानसर्वमागलाकीलितश्रीयसुह ॥ ॥ दहनिमावधाव

५॥२

६

ॐ भवती सर्वमाह गम् । कृतान्तयासनिबोधा कोमा विविधरायिनी ॥ ॥ विद
यावमितादवीङ्ग रादानन्दलोचनी । तायसिङ्गवृद्धीवृक्षधिसिद्धिवलयदा ॥
॥ दानयूथ्यामहासागाज्जिताङ्गाविदुमा । जगदेकादिगाविद्यास्य
मातावतीशुता ॥ ॥ क्षात्रियावमितादावभीलनिधानधायीधी । यद्गवि
यद्गधविदयधमासनमासनी ॥ ॥ शुद्धवृषिमहातडाहमवक्रयराकवा

२

॥ विनामनिधविदवीयहायूक्तकक्षवती ॥ ॥ निधानकूटमावृष्टिध्यागावध
नयीय । गेधकु कमलश्रदिदिशारुवधरसिधी ॥ ॥ मातवी सर्ववृक्षानां स्व
धातधवस्यवी । शुभ्रताताविनिधवीरावातावविवर्द्धिनी ॥ ॥ धेनयकिव
नतावहीयिधीक्षेत्रकदनी ॥ ॥ हिन्दुनि सर्वमागानां सफयागवक्षारनी ॥ ॥
वृक्षगीवदमागाधगुफालागुश्रवाग्निनी । सवधनिवितावाक्षीवगुवृक्षविहा

७

विधी॥ गथागानिसहाय्यावर्जिनियमधविधी॥ कर्मधनधविविद्याविश्वका
लारुसधुवी॥ ॥ धाधनिसवेसत्यानांवाधकुरुनक्षत्रविधानादिमकिंसांय
नामहयाइयहाविनी॥ ॥ सर्वार्थसाधनिरुद्राक्षीर्यामितविक्रमावदमेनिव
इमारोमनांनष्टमारोयदमेनी॥ ॥ वारािश्वरीमंहाभक्तिर्याफिधाशीधनंद
दास्त्रीर्यधवहीसिद्धायागिहीधारासधवी॥ ॥ मनाहविमहाकानिमे॥

हाययियदमेनी॥ सार्थवारुहयावृष्टिसर्वेगाथागतात्मकी॥ ॥ नमस्तुभमहा
दवीसुवेसत्यार्थदायनिनभास्तुगदिद्यवृष्टिब्रह्मसधवानमःस्तुभ॥ अक्षारुवमः
कनामंवि कालंय॥ ॥ दिमांस्याप्रागिनियमंमिद्धिनिमित्तंमसनावधं॥ ॥ यदः
ज्ञानकृतयायमानंरुयसदावृष्टा॥ कस्तुर्वेकृत्यणासस्तवधनामरुदकं॥ ॥
अथवाजीवसंयत्तासकडागिस्तवार्थवृष्टीयधदयवाकववृष्टवानूयीयदमे॥

न॥ ॥विषयकृषिकृत्तवृत्तमयजायक॥अकहमीधवयार्थयंवायाः
 यमखावतिं॥ ॥मृत्तिआर्थीवसुधावायानामाष्टरुवभक्तवृद्धः
 व तासिगसमाय॥ ॥आदित्या॥ ॥०॥ ॥इतमारावरोआर्थवजविदावल्हे॥ ४
 तमावृद्धाय॥एवंमयाअरुभक्तिसमयरावान्दक्षवृद्धिरुवमिसासर्वसर्विर्वदक्षम
 यमविष्टायवृद्धयाधिश्चवृद्धानरावनवृद्धसमाधिसमायनः॥नगावृद्धयाधिवृद्धानरावन

सर्ववृद्धाविष्टानाचमरुर्ध्वसंरुगंवृद्धसारयदरावभक्त॥अद्विष्टमलयसखंदरुः
 सिगंसर्वेगायनिरुगंसर्वेगायनाजिगंसर्वेसत्वाविदायनकरंसर्वेसत्वासादनक
 वंसर्वेविद्याशुद्धनकरंसर्वेविद्यासुद्धनकरंसर्वेकमेविध्वंसनकरंसर्वेकमे
 विदायनकरंसर्वेयशुद्धादनकरंसर्वेयशुद्धविभाद्धनकरंसर्वेरुतायकषेधकरं
 सर्वेविद्यामनुकरायनकरं॥सिद्धानांसिद्धकरंसिद्धानायायिनासनकरंसर्वे

५

ह ॥ ॐ वृषश्चक्रकिलिकिलायसाह ॥ ॐ गभयश्चक्रकिलिकिलायसाह ॥ ॐ
रुनश्चक्रधवायसाह ॥ ॐ यरुनश्चक्रयलंकायसाह ॥ मनिहिववक्रधुनिहिव
ववक्रयनिहिववक्रमहावक्रमयनिहिववक्रमभायवक्रयधिवक्रभीर्धवः ७
जायसाह ॥ ॐ धवश्चिनिश्चवृश्चरु ॥ ॐ नमः समनवृद्धानां ॐ महावलवटिव
नगलजवलेमधुलमायमनिवक्रमहावलनयूजिनकालरटिठिरीटीरटिन

वदरुदश्चवश्चक्रगजवनिगिलिश्ववश्चमहावलवक्रवक्रां वृषहालायः
साह ॥ नमस्तुभ्याय ॥ नमश्चक्रवक्रयाधयमहायकमनायनय ॥ नयध ॥ ॐ
रुनश्चक्रमधश्चक्रश्चनश्चक्रधनश्चक्रधनयश्चक्रविधुनश्चक्रकिद
श्चक्रतिदश्चक्ररुद ॥ ॐ नमश्चक्रवक्रयाधयमहाकोधयह्वश्चवश्चरुन
श्चक्ररुदसाह ॥ रुदयम ॥ ॐ नमस्तुभ्याय ॥ नमश्चक्रवक्रयाधय ॥ रुल

लक्ष्मि ॥ न वायु वा धिदिरे वाथारु विद्युकि ॥ जातो जातो जातिस्म वा रु विद्युकि ॥ ॐ दम वाच इ ग वा
 नारु म ना रु च कि रु व रु व वा धि स स्वा सा च सर्वा व ति य र्घ स ध व मा न सा स व रा ध वे धु ला का रु ग
 व मा ला धि र्ग म स न न नि कि ॥ आर्ये महा ग रा य रु द य ना म धा व नि य वि स मा फः ॥ ॐ ॥ जं ग ल्या ॥
 ॐ ॥ १० ॥ न मा रु ग व नो आ र्थो ष वि रु या र्थे ॥ न र्व म या रु म क सि स म य रु ग वा न् स र्वा व रु
 ध र्म स गि कि स हा रु का पा मा द रु ग व न वि रु त सि स र्वा य कि षि ता रु ग वा न् य क्त ध र्मा आ र्थो व

ला कि रु ध र्व वा धि स त्व म हा स र्व सा म रु य कि स्म ॥ स कि क ल य रु दः वि ता न् स त्वा न्ना ना या धि य वि
 यी ति ता न ल्या य क्तान् र्वा म धा य दि ता य स र्वा य ॐ मा स र्व धा ग ता ष वि रु या ना म धा व नि य वि
 य रु द य रु य वा प्र या य रु य वि रु व न र्म य का स य रु ॥ दी धा य क्त ता म या दा य कि ॥ अ ध र्व स र्वा
 र्था व ला कि रु व वा धि स त्व म हा स त्व रु द य स ना द कौ स म रु ली क ता ऊ लि य ता रु त्वा रु ग व रु
 म रु द वा च रु ॥ द य रु रु ग व न् स र्व र्था ग ता ष वि रु या ना म धा व नि द य रु स र्वा रु ॥ अ ध र्व ल

ॐ

रुगावा नमो वही यष मउ लमव लाक सम काव लाकि र गाय नाम समाधि समा य वि सां सर्वे त
थागता श्रीष विदुया नाम धाव सि लाय क स्म ॥ ॐ नमो रुगाव न सर्वे उ ला क य कि वि वि शि य व द्या य न
नमः ॥ नमः ॥ ॐ नमो रुगाव न सर्वे उ ला क य कि वि वि शि य व द्या य न
व वि गु ड ॥ ॐ नमो रुगाव न सर्वे उ ला क य कि वि वि शि य व द्या य न
हि व के म दा म दा म रु य दे ॥ ॐ नमः रुगाव न सर्वे उ ला क य कि वि वि शि य व द्या य न

१०

वि गु ड ॥ ॐ नमो रुगाव न सर्वे उ ला क य कि वि वि शि य व द्या य न
मि ना य वि य वि नी ॥ सर्वे उ ला क य कि वि वि शि य व द्या य न
न ॥ ॐ नमः रुगाव न सर्वे उ ला क य कि वि वि शि य व द्या य न
म मा य वि गु ड ॥ सर्वे उ ला क य कि वि वि शि य व द्या य न
म दा वि म नि ॥ म नि रु म दा म नि म म नि म म नि रु थ ना रु म का टि य वि गु ड ॥ वि म रु ट वि गु ड

[illegible][illegible]

वासोसदृशं वासोयुग्मं यथाकायं यथाध्यायं यथावशेन वशादिकं सर्वं यथा हिः यथा यत् ॥ ॐ ॥
 मांसं वेदं कथां भाषां विदुः याताम धावती वाचरुः ॥ अन्तर्द्वारं कुरुते चेत्यमस्ति मच्च यत् ॥ यत् ॥
 वृद्धस्य श्रियमिनायनाम धाविभारु विष्णु नि ॥ दानं दानं यत् सफदिनाय सफसासायः ॥ यत् ॥ १२
 गामि यत् ॥ सफसासायः सफवर्षा सिद्धि वती ॥ सफवर्षा यः सफवर्षा नीडी वति ॥ यत् ॥ सफ
 यः शर्तं डी वति ॥ स्मृति सारु वति ॥ सदाशाय विमका र वति ॥ श्री वायु वध स यत् न धरु वति

॥ आये श्री विदुः याताम धावति यत् स मायः ॥ ॥ दृष्ट्या ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॥
 ॥ नभा रगा वत् ॥ ज्ञाय यत् ॥ शवरी का वाये ॥ नभा वत् ॥ यथाय ॥ नभा ज्ञा मिना लाय मथा वता
 या हन्तं स मा कुरु स वत् ॥ नभा ज्ञा यो वत् ॥ किं धराय वा धि स त्याय म हा स त्याय म हा का
 वृत्ति काय ॥ नभा म हा रू न या फाय वा धि स त्याय म हा स त्याय म हा का वृत्ती काय ॥ वासन
 लीन म त्या मि लीन म त्या मि तासन ॥ रगा वत् ॥ कि यि मा चि यत् ॥ शवरी या शय वत् ॥ धावती ॥ यानि कानि

विदुः शान्त्यर्थः ॥ यानिकानि चित्समहासाया यानिकानि चित्सनथाथक विदुः यदथो कः
विदुः यायासा क विदुः थामिका रुयाः क विदुः यमगाड यमवडाड ल्यदन्तः सर्वानाः सर्व
नवाययन नमस्तुतः ॥ नदननस्यनस्यववननस्यवाक्यनः ॥ ऊँः ऊँः ऊँः ऊँः १३
चक्रिः यस्तुत विष्टिके मरुयदन्तः ॥ समसदेसलानाथी वक्रा कव्यविज्ञान कव्यविगद
कव्यविद्यावर्न कव्यानि स्वस्तियन कव्य दलुयविहावर्न कव्य धवमीवधर्न कव्यः ॥ नय

ॐ नमः शिवाय ॥ अथ श्रीगणेशस्तोत्रम् ॥
 गणेशाय नमः सर्वपापहर्त्रे ॥
 भक्त्या प्रीतये नमः ॥
 त्र्यम्बके नमः ॥
 सवित्री देव्याय नमः ॥
 लक्ष्मीदेव्याय नमः ॥
 कल्याणाय नमः ॥

[illegible]

भा ३ नृगच्छ कि। सा नृगच्छ कन गृह कन नृगच्छ कन निवृत्त कन मूर्ख कन मूर्ख कन दृष्ट कन मूर्ख
 दृष्ट कन मूर्ख मूर्ख कि। या यि कथाः कि कथा मा वि वि नाम द व का र्यां नाम ~~नाम~~
 जाना कि सा यि नृगच्छ कन गृह कन नृगच्छ कन निवृत्त कन मूर्ख कन गृह कन दृष्ट कन दृष्ट कन मूर्ख
 मूर्ख कि। सा नृगच्छ कन गृह कन नृगच्छ कन निवृत्त कन मूर्ख कन गृह कन दृष्ट कन दृष्ट कन मूर्ख
 कन मूर्ख कन मूर्ख कन दृष्ट कन दृष्ट कन मूर्ख मूर्ख कि॥ ७०॥ सा नि मरु य दानि रु वि

नि॥ कथं ध्या॥ उं पदा कमसि यवा कमसि उदयमसि वेवमसि अर्कमसि मर्कमसि दुर्ममः
 सि वनमसि वनमसी ए॥ समसि विलमसि अरुक्षानमसि स्वाहा॥ उं मा वि वि द व न यः
 य मां गाय य उ य य मां गाय य वा ऊ क व मा मां गाय य वृ ऊ न य द मा मां गाय य वा ऊ क ल ७५
 मा मां गाय य द स्ति रु य मा मां गाय य ओ व रु य मां गाय य अ मि रु य मां गाय य उ द क रु
 य मां गाय य सर्व य र्थि क य र्थि मि उ रु य मां गाय य आ क व य अ ना क ल ष म डी न व

अ म डी न व सिं रु न म व रु या य मा म व रु स ये मा म व रु ॥ कथं ध्या॥ उं आ वा गा ला म र्क ला
 स त्व म डी कि व रु व रु य व र्णं द य मां स य वि वा व स वं स त्वा व स वं रु या य द व र्णः स्वा
 हा॥ न मा व ल रु या य ॥ उं न मा रु मा व र्ण आ र्थ मा वि वि द व न य र्थ रु नः रु द यं मा व र्ण यि या
 मि ॥ कथं ध्या॥ उं व र्ण लि व ला लि व ल रु म् खि स वं द रु य द रु नो व रु म् खं व वं रु स्वा हा
 ॥ उं व न ल व र्ण लि व द लि व ला रु म् खि स वं द रु य द रु नो व रु म् खं व वं रु स्वा हा ॥ अ

॥ अथ माविनी नाम धावसि समाकः ॥ ॥ सुकल्या ॥ ॐ ॥ ॥ १६ ॥ नमो गव
 ॥ अथ गव मातु काथे ॥ ॥ १७ ॥ मया यत्नम कस्मिन्मय रगवान् ॥ १८ ॥ कवर्णम दान गयी
 विद्वत्किम् ॥ ॥ १९ ॥ मत्त कव वना गय क गधे वा सुव गव उ किं न व म दान गय सा वा दि स्या मा ॥ १९
 गान व द वृ ह ल्य कि शु क्क म नि य व वा रु क तु रि व र्ण विं श कि रि य न क या दि रि स्ये मा
 नाम द व ड सिं हा मया लं का वा धि स्या ना धि छि न वि द व कि स्म ॥ ॥ २० ॥ मत्त क वा धि स ल्य ग न स

॥ २१ ॥ मा विनी नाम धावसि समाकः ॥ ॥ सुकल्या ॥ ॐ ॥ ॥ १६ ॥ नमो गव
 ॥ अथ गव मातु काथे ॥ ॥ १७ ॥ मया यत्नम कस्मिन्मय रगवान् ॥ १८ ॥ कवर्णम दान गयी
 विद्वत्किम् ॥ ॥ १९ ॥ मत्त कव वना गय क गधे वा सुव गव उ किं न व म दान गय सा वा दि स्या मा ॥ १९
 गान व द वृ ह ल्य कि शु क्क म नि य व वा रु क तु रि व र्ण विं श कि रि य न क या दि रि स्ये मा
 नाम द व ड सिं हा मया लं का वा धि स्या ना धि छि न वि द व कि स्म ॥ ॥ २० ॥ मत्त क वा धि स ल्य ग न स

शं यथेव शाक्त कल्याणं स्वर्णं सुखं कर्तव्यं यद्विष्णुर्देव यथेव दानं दत्तं च यथे
यका सयति स्म ॥ चिकामसि मदाय दालं कालनामधमे यथेयं दं शयति स्म ॥ जय तव
लूकगवान् वद या निष्कय धर्मं लं मवली का सुता दल्य दज्ञान न र्गवत्क मने क १०
कस दस्य प्रद कि सि रु स्य पुर्णं मय व भानि षय स्मर्त्तुं मवद यथे क मा पूये ली लया वजां
कलि कला स्म द दया प्र कि ष य र्गवत्क मने द वा च ॥ य हा य र्गवत्क मने द वा च ॥ य हा य र्गवत्क मने द वा च ॥

डा मो ड व या प्र कला कल चिकामसि मदाय दालं कालनामधमे यथेयं दं शयति स्म ॥ जय तव
लूकगवान् वद या निष्कय धर्मं लं मवली का सुता दल्य दज्ञान न र्गवत्क मने क १०
कस दस्य प्रद कि सि रु स्य पुर्णं मय व भानि षय स्मर्त्तुं मवद यथे क मा पूये ली लया वजां
कलि कला स्म द दया प्र कि ष य र्गवत्क मने द वा च ॥ य हा य र्गवत्क मने द वा च ॥ य हा य र्गवत्क मने द वा च ॥

लविष्यः १६ कं गुहासम्यव्याप्तं सति कृत्वा विष्णुनां गुहातिगुप्तं न दिश्यं यजामघेयः
 जायेत धर्मवैयथानकमेवैतद्वेद न सर्वेषां यथा तु यन्निर्गुहाः पूजिता यन्निर्गुहाः
 निदहन्त्यप्रमानिताः दवाश्चासन्नास्तेव किन्नास्तेव सर्वयुक्तश्च वाक्सास्तेव युक्ताः १६
 स्तेव मानूषाः ॥ समयन्ति च कर्षासाहास्यमृगं कसाः पूजाशर्षाप्रवक्षामि सखाः
 धियथावकुर्म ॥ ॥ अथ त्वत्तु गवान्माकसूनिस्तथागतः स्वहृदयात्कवशादिः

कीर्तिकं नाम वभिज्जालं निश्चायेत हासं मृद्विषवधयति स्म ॥ अथ कल्पादवसवेण हाः
 आदिस्थादथाऽऽहृयासनाहृवावर्कं माकसूनिस्तथागतं सहर्कं सर्वपूजाहिः पूजयित्वा
 यद्यथा जानिष्यत्कमाजैरिष्यत्तत्त्वाहृवावर्कं भवमाहृवाजयत्तु हिमावर्कं हृवाव
 र्कं तथागतं नाहृना स्यात्कर्मवर्धनं नयप्रयत्नं हृवावान्कर्कधर्मयथायैकं गोयनवर्कं
 सामगीहृत्वा धर्मज्ञानकस्यवर्कं कुर्यात्सः शुक्तिं यन्निर्गुहं यद्विद्यं यद्विद्यावर्कं माकि

स्वस्वयनं दधुयविह्वं विषद्वर्णं विषनाभनं जिमावंधधवनावधं चक्रयोमः ॥ अ
 धस्वल्गुवावान्नामसुनिस्तथागतगदाधायुजामलाध्वलापमस्तथाक्रमेवर्ले
 धनदनदिमास्तथायदिमाधवाधेमधुल कल्यायमस्त्यकर्त्तिकारुद्रादज्ञां गुल्लवः ॥ १९
 दध्नीगुल्लवैर्वालादिभारुवैर्कर्त्तुं वा तत्सम्भवि कश्चित्तयथायविविक्तयधवताः
 स्वर्वायसव्यध्वं रुजास्तीसितकमलध्वं सिंदूरवर्त्तुसर्मगआमालिनिवि

गद् ॥ उंमधाकावायमादित्यायनमः स्वाहा ॥ यूधेदवा ॥ उं चन्द्रामृतविक्रमाय जी
 र्वांशवनमः स्वाहा ॥ अय्योदल ॥ उं वक्रावाकमावायज्जगत्वायनमः स्वाहा ॥ दधि
 नदल ॥ उं वाङ्मयुवद्वाययीगवर्त्तुयनमः स्वाहा ॥ नैमयदल ॥ उं कनकवर्त्तुनिर्गमा
 यज्ञावायदायनमः स्वाहा ॥ यश्चिमुदल ॥ उं अमर्वाकमायगुकाधियनयनमः
 स्वाहा ॥ रुस्यनय ॥ २२ ॥ वायुवदल ॥ उं रुक्मवर्त्तुयज्ञानिधवायनमः स्वाहा ॥ उरुवदल

[illegible][illegible]

वायुस्य दधिरुर्कं विवरु कस्य दधिरुर्कं । विवरु कस्य दीर्घं क्वववस्य माषरुर्कं
 सिंदूरसमं ॥ ॐ स्वयं वलि ॥ ० ॥ ॐ मानि वज्रयाक्षय हानां पुजा सकुरु दद्यानि य
 तित सिद्धा नि यथानुक्रमे वरुं हृदय न राधे मधुल कं कृत्या मास मृत्सय वृथा दिहा जन २ २१
 र्द्ये दत्वा अश्वी र्नु व भक्त वा वा व न के क मरुं जय न् ॥ यथा त्वन वज्रयाक्षय हमा रु काना
 म धावतिः स फ वा वा न्नी व चि क या ॥ क न सर्वं य हा दि ह्या द या व का व ले गु र्फि क वि स्थ मि

॥ गमाय दीर्घायुर्वक विष्णुक्ति ॥ यच खलू पनव ऊया धि क्ली कृत्थ या मका पात्रिका ॥
यच सत्ता जाकिया यर्षा क र्त्तु पठनियटिष्णुक्ति कर्षा मका वमृत्ता नाकारं क विष्णुक्ति यच
खलू पनव ऊया धि य द मंशु लम धाय डिगो स्थि ला दिन २ वा व शिष्णुक्ति कृत्थ धर्म हान
कृत्थ सर्वश हा सर्वोत्त कक्षा सर्वा साय विपूव शिष्णुक्ति ॥ कर्त्तु ला द पिदा विडं ना जयि
ष्णुक्ति ॥ ॥ अथ खलू धा क मूनि कृत्थ गतः पूनव पिण्ड रुमा रु काना मधव ति

[illegible]

वनवनिवर्षानिमृशरुच्यनरुविच्यनिःडकायाकथदनदुपयोजरुच्यनरुविच्यनिः
॥ जाओजाओजाकिस्मभरुविच्यनिः ॥ सर्वगदाः पूजिताश्चरुविच्यनिः सर्वगदाः ॐ पि
तावर्षास्यनिः ॥ अथनगदाजादिसादथाकवावक्तसाकंधरुवावान्निति ॥ ०
॥ ॐ दं सदाचरुवाकवावान्नारुसनाश्चरुहिदुवाधिसत्यासदासत्यारुसावसर्वावः
नियमस्तदवमान्वासूवगवत्समदावगागवर्षधुलाकारुवावकासापिकसत्यानयति

ती॥ ० ॥ अथैषदमाह कानामध्वनीयविसमाहः॥ ० ॥ अनिश्या॥
 अधर्मादुरुपरावाहुरुकसांमध्वनीयविसमाहः॥ ० ॥ अनिश्या॥
 महाप्रमर्श॥ ० ॥ अथैषदमाह कानामध्वनीयविसमाहः॥ ० ॥ अनिश्या॥

आ.स. १३३३

1.650

ASNA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

1550

